सतनाम रामईया रामईया सतनाम

"ऐक पत्र" (ज़फ़रनामह)

• कमाले करामात कायम करीम । रज़ा बख़्शी राज़िक रिहाको रहीम । • अमां बख़्शो बख़्शिंद ओ दसतगीर । ख़ता बख़्श रोज़ी दिहो दिल पज़ीर ।

अर्थ :-वह दयालु प्रभु करामातों में पूर्ण, सदव अचल, कृपालु, आज्ञा में चलनेवाले पर मेहरबान, आजीविका प्रदान करनेवाला मुक्तिदाता है । वह सुखदायक, क्षमाशील और हाथ थामनेवाला है । वह गुनाह माफ़ करने वाला, रोज़ी देनेवाला और सबको मनचाहे पदार्थ देनेवाला है ।

• शहिनशाह ख़ूबी दिहो रह नमूं । कि बेगून बेचूंन चूं बेनमूं । • न साज़ो न बाज़ो न फ़ौजो न फ़रश । ख़ुदावंद बख़्शिंदए ऐश अरश ।

अर्थ :-वह सम्राटों का सम्राट और सबका पथ-प्रदर्शक है और रंग-रूप एवं विकारों से परे है । साज-समान, बाज़ सेना, धरती से विहीन लोगों को भी (कृपा करके) भगवान ऐश्वर्य और स्वर्ग प्रदान करनेवाला है ।

• जहां पाक ज़बरसत ज़ाहिर ज़हूर । उज़ामी दिहो हम चु हाज़िर हज़ूर । • अता बख़्शओ पाक परवरदिगार । रहीम असतो रोज़ी दिहो हर दियार ।

अर्थ :-वह जगत्-प्रपंचों से पवित्र, साक्षात् प्रकट रूप में सबको दान देनेवाला (ख़ुदा) है । वह सबकी परवरिश करनेवाला पवित्र है । वह दयावान और प्रत्येक कोआजीविका प्रदान करनेवाला है ।

• कि साहिब दिआर अस्त आज़म अज़ीम । कि हुस्नुल जमाल अस्त राज़क रहीम । • कि साहिब शऊर असत आजिज़ निवाज़ । ग़रीबुल प्रसतो ग़नीमुल गुदाज़ ।

अर्थ :-वह महानों का महान ख़ुदा देश-देशान्तरों का स्वामी है । सुन्दरता का सौंदर्य वही है और वही दयालु और रोज़ी देनेवाला है । वह मालिक स्वयं चातुर्य से युक्त है, अनाथों का बड़प्पन प्रदान करनेवाला गरीबपरवर और दुष्टों को गला देनेवाला है ।

• शरीअत प्रसतो फ़ज़ीलत मआब । हक़ीक़त शनासी नबीउल किताब । • कि दानिश पियूहसत साहिब शऊर । हक़ीक़त शनाससत ज़ाहर ज़हूर ।

अर्थ :-वह न्याय-प्रिय, बड़प्पन से परिपूर्ण, सत्यतत्त्व की पहचान देनेवाला तथा सभी धर्मग्रंथों द्वारा महान् माना जानेवाला परमात्मा है । वह दानाई का कद्रदान, विवेक का स्वामी, सच्चाई की पहचान करनेवाला और सदैव प्रकाश-रूप में प्रकट है ।

• शनासिंदए इलम आलम ख़ुदाइ । कुशाइंदए कार आलम कुशाइ । • गुज़ारिंदए कार आलम कबीर । शनासिंदए इलम आलम अमीर ।

अर्थ :-वह ख़ुदा सर्वविद्याओं का जानकार, संसार के कार्यों के भेदों को खोलनेवाला, सभी कार्यों को तरतीब देकर उन्हें क्रम से करने वाला है । वह स्वामी संसार के बड़े कामों को चलानेवाला महान है । समस्त विद्याओं का ज्ञाता, विद्वान और संसार का नायक है ।

साच कहों सुन लेहु सभै - जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ । कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै - बैठ रहियो बक धिआन लगाइओ । न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रन - लोक गयो परलोक गवाइओ..।

M & S gi   www.9009.co.in   OUM

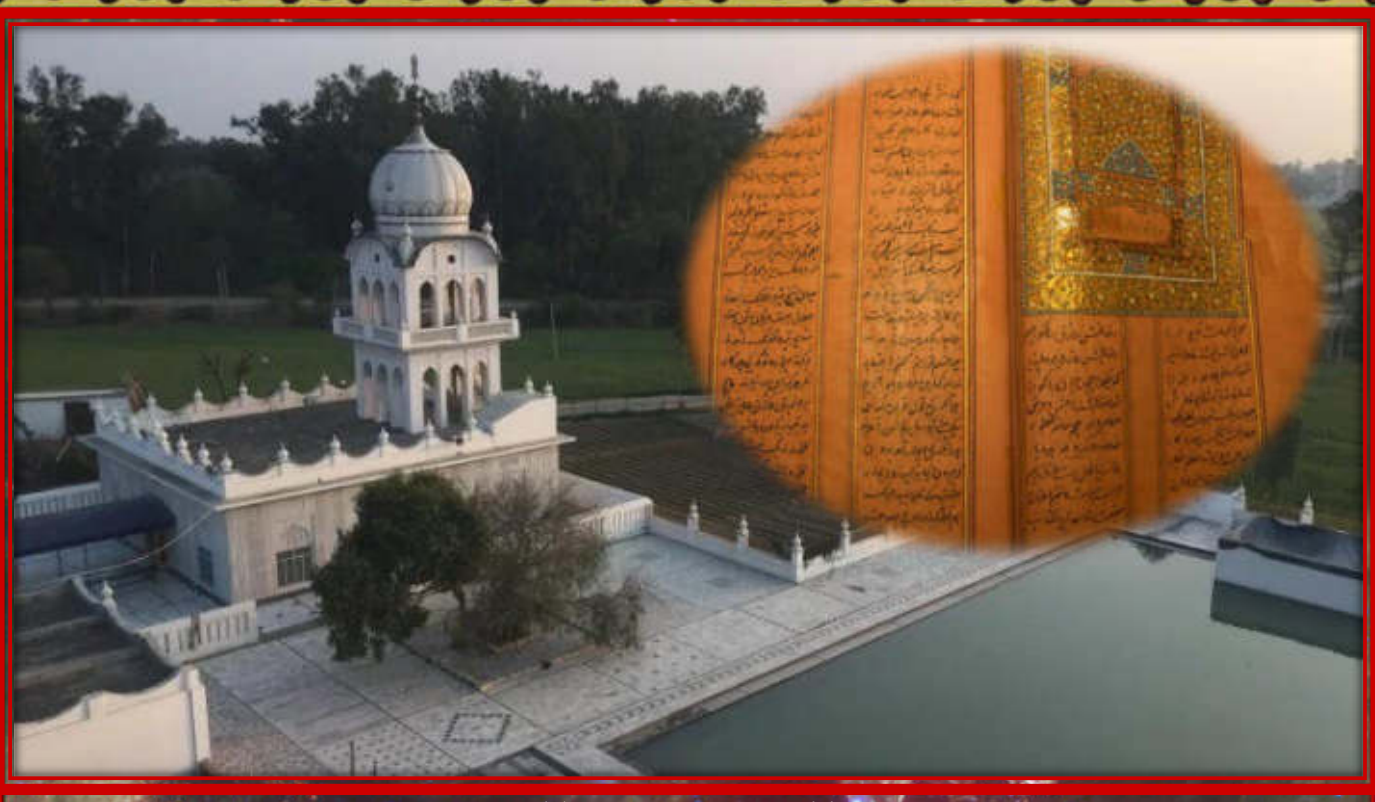

"ऐक पत्र"

(ज़फ़रनामह)

1. कमाले करामात कायम करीम । रज़ा बख़शो राज़िक रिहाको रहीम ।

अर्थ :- वह दयालु प्रभु करामातों में पूर्ण, सदव अचल, कृपालु, आज्ञा में चलनेवाले पर मेहरबान, आजीविका प्रदान करनेवाला मुक्तिदाता है ।

2. अमां बख़शो बख़शिंद ओ दसतगीर । ख़ता बख़श रोज़ी दिहो दिल पज़ीर ।

अर्थः- वह सुखदायक, क्षमाशील और हाथ थामनेवाला है । वह गुनाह माफ़ करने वाला, रोज़ी देनेवाला और सबको मनचाहे पदार्थ देनेवाला है ।

3. शहिनशाह ख़ूबी दिहो रह नमूं। कि बेगूंन बेचूंन चूं बेनमूं ।

अर्थः- वह सम्राटों का सम्राट और सबका पथ-प्रदर्शक है और रंग-रूप एवं विहारों से परे है ।

4. न साज़ो न बाज़ो न फ़ौजो न फ़रश । ख़ुदावंद बख़शिंदए ऐश अरश ।

अर्थः- साज-समान, बाज़ सेना, धरती से विहीन लोगों को भी (कृपा करके) भगवान ऐश्वर्य और स्वर्ग प्रदान करनेवाला है ।

5. जहां पाक ज़बरसत ज़ाहिर ज़हूर । उज़ामी दिहो हम चु हाज़िर हज़ूर ।

अर्थः- वह जगत्-प्रपचों से पवित्र, साक्षात् प्रकट रूप में सबको दान देनेवाला (खुदा) है ।

6. अता बख़शओ पाक परवरदिगार । रहीम असत रोज़ी दिहो हर दियार ।

अर्थः- वह सबकी परवरिश करनेवाला पवित्र है । वह दयावान और प्रत्येक को आजीविका प्रदान करनेवाला है ।

7. कि साहिब दिआर असत आज़म अज़ीम । कि हुसनुल जमाल असत राज़क रहीम ।

अर्थः- वह महानों का महान खुदा देश-देशान्तरों का स्वामी है । सुन्दरता का सौंदर्य वही है और वहीं दयालु और रोज़ी देनेवाला है ।

8. कि साहिब शऊर असत आजिज़ निवाज़ । ग़रीबुल प्रसतो ग़नीमुल गुदाज़ ।

अर्थः- वह मालिक स्वयं चातुर्य से युक्त है, अनाथों का बड़प्पन प्रदान करनेत्राला ग़रीबपरवर और दुष्टों को गला देनेवाला है ।

9. शरीअत प्रसतो फ़ज़ीलत मआब । हक़ीक़त शनासो नबीउल किताब ।

अर्थः- वह न्याय-प्रिय, बड़प्पन से परिपूर्ण, सत्यतत्त्व को पहचान लेनेवाला तथा सभी धर्मग्रंथों द्वारा महान् माना जानेवाला परमात्मा है ।

10. कि दानिश पियूहसत साहिब शऊर । हक़ीक़त शनाससत ज़ाहर ज़हूर ।

अर्थः- वह दानाई का कद्रदान, विवेक का स्वामी, सच्चाई की पहचान करनेवाला और सर्वत्र प्रकाश-रूप में प्रकट है ।

11. शनासिंदए इलम आलम ख़ुदाइ । कुशाइंदए कार आलम कुशाइ ।

अर्थः- वह खुदा सर्वविद्याओं का जानकार, संसार के कार्यों के भेदों को खोलनेवाला, सभी कार्यों को तरतीब देकर उन्हें क्रम से करने वाला है ।

12. गुज़ारिंदए कार आलम कबीर । शनासिंदए इलम आलम अमीर ।

अर्थः- वह स्वामी संसार के बड़े कामों को चलानेवाला महान् है । समस्त विद्याओं का ज्ञाता, विद्वान् और संसार का नायक है ।

13. मरा एतबारे बरीं क़सम नेसत । कि एज़द गवाहसत यज़दां यकेसत ।

अर्थः- तुम्हारे यह कहने पर कि भगवान एक है और हमारी-तुम्हारी बातचीत में गवाह है, मुझे ज़रा भी विश्वास नहीं है ।

14. न क़तरह मरा एतबारे बरोसत । कि बख़शी व दीवां हमह किज़ब गोशत ।

अर्थः- मुझे तुम्हारी क़सम पर रत्ती भर भी यक़ीन नहीं है । तेरे कारिंदे, दीवान आदि (जो तुम्हारा पग़ाम मेरे पास लाए थे) सब झूठ बोलनेवाले थे ।

15. क़से क़उल कुरआं कुनद इअतबार । हमा रोज़ आख़िर शवद मरद ख़्वार ।

अर्थः- कुरान की तुम्हारी खायी कसम पर भरोसा करनेवाला भी आखिरी दिन अर्थात् मौत के दिन लज्जित और ख्वार ही होगा ।

16. हुमा रा कसे सायह आयद बज़ेर । बरो दसत दारद न ज़ाग़ो दलेर ।

अर्थः- हुमा पक्षी अर्थात परमात्मा की परछाई (कृपा) के नीचे आ जानेवाले का दिले से दिलेर कौआ कुछ नहीं कर सकता अर्थात् तेरे

सैनिक उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते जो परमात्मा की छत्रछाया में है ।

17. कसे पुशत उफ़तद पसे शेर नर । नगीरद बुज़ो मेशो आहू गुज़र ।

अर्थः- यदि कोई शेर के पीछे खड़ा हो, बकरी और हिरण का उस व्यक्ति को पकड़ना तो दूर, कोई उस ओर से गुज़रना भी पसंद नहीं करता ।

18. क़सम मुसहफ़े ख़ुफ़ीयह गर ई ख़ुरम । न फ़ौजे अज़ीं ज़ेर सुम अफ़कुनम ।

अर्थः- यदि तुम्हारी कुरान की क़सम जैसा धोखा मैं भी मन में रखता तो मैं अपनी प्यारी फ़ौज को लँगड़ा न करवा लेता अर्थात् व्यर्थ ही न मरवा देता ।

19. गुरसनह चिकारे कुनद चिहल नर । कि दह लख बरआयद बरो बेख़बर ।

अर्थः- पेट से भूखे चालीस व्यक्ति उस समय क्या कर सकते हैं, जो उन पर दस लाख (सैनिक) अचानक ही टूट पड़ें ।

20. कि पैमा शिकन बेदरंग अमादंद । मियां तेग़ तीरो तुफ़ंग आमदंद ।

अर्थः- कटार को तोड़नेवाले अविलम्ब आ पहुँचे । वे तलवारों, तीरों और बंदूकों-समेत आ पहुँचे ।

21. ब लाचारगी दर मियां आमदम । ब तदबीर तीरो तुफ़ंग आमदम ।

अर्थः- तब मजबूरी में मैं युद्ध में आया । तीरों-बंदूकों से सुसज्जित होकर आ पहुँचा ।

22. चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत । हलाल असत बुरदन ब शमशेर दसत ।

अर्थः- जब कार्य के लिए सभी उपाय समाप्त हो जाएँ तो तलवार-सहित हाथ उठाना धर्मसम्मत है ।

23. चि क़समे कुरां मन कुनम एतबार । वगरनह तु गोई मनई रह चि कार ।

अर्थः- मैं कुरांन की क़सम का विश्वास कसे करूँ अन्यथा तुम ही बताओ, भला मुझे इस -(युद्ध के) रास्ते पर क्यों चलना था ?

24. न दानम कि ई मरद रोबाह पेच । वगर हरगिज़ीं रह नयारद बहेच ।

अर्थः- मैं नहीं जानता था कि यह पुरुष (औरंगज़ेब) लोमड़ी की तरह मक्कार है अन्यथा मैं किसी भी तरह इसकी क़सम को मानने के रास्ते पर न आता ।

25. हर आंकस कि क़उले कुरां आयदश । नज़ो बसतनो कुशतनी बायदश ।

अर्थः- उस हर व्यक्ति को, जो कुरान की क़सम पर है, उसे घायल करना अथवा मार डालना उचित नहीं है ।

26. बरंगे मगस स्याहपोश आमदंद । ब यक बारगी दर ख़रोश आमदंद ।

अर्थः- काले कपड़े पहने वे मक्खियों के समान (अगणित संख्या में) आ पहुँचे और एक ही बार में उत्तेजित हो टूट पड़े ।

27. हर आं कस ज़ि दीवार आमद बिरूं । बख़ुरदन यके तीर शुद ग़रकि ख़ूं ।

अर्थः- जो भी व्यक्ति दीवार की ओट से बाहर आया, वह हमारा एक ही तीर खाकर रक्त में डूब गया ।

28. कि बेरूं नयामद कसे ज़ां दीवार । न ख़ुरदंद तीरो न गशतंद ख़्वार ।

अर्थः- जो भी दीवार की ओट से बाहर नहीं आया, उसने न तो तीर खाया और न ही उसे लज्जित होना पड़ा ।

29. चु दीदम कि नाहर बियामद ब जंग । चशीदह यके तीर मन बेदरंग ।

अर्थः- जब मैंने देखा कि नाहर खाँ जंग में आया है तो तुरन्त एक तीर उसने अपने शरीर पर खाया ।

30. हमा ख़र गुरेज़द बजाए मसाफ़ । बसे ख़ानह ख़ुरदंद बेरूं गुज़ाफ़ ।

अर्थः- पीछेवाले सैनिक भाग गए जो पठान (युद्धस्थल से) बाहर अत्यधिक शेखी बघारते हैं ।

31. कि अफ़गन दीगर बियामद बजंग । चु सैले रवां हम चु तीरो तुफ़ंग ।

अर्थः- एक अन्य पठान युद्ध के लिए आया था जो नदी की बाढ़ की तरह आया था अथवा तीर या बंदूक़ की गोली को तरह आया था।

32. बसे हमलह करदंद ब मरदानगी । हम अज़ होशगी हम ज़ि देवानगी ।

अर्थः- बहुत से आक्रमण बहादुरी के साथ किए । कुछ बुद्धिमानी से भी किए और कुछ पागलपन से भी किए ।

33. बसे हमलाह करदो बसे ज़ख़्म ख़ुरद । दु कस रा सखाँ कुशत हम जां सपुरद ।

अर्थः- बहुत से हमले हुए, बहुतों ने घाव खाए । (हमारे पक्ष के) दो आदमियों (गुरुजी के पुत्र अजीत सिह और जुझार सिंह) को मार दिया और (आक्रमणकारी) स्वयं भी जान दे गये ।

34. कि आं ख़्वाजह मरदूद सायह दीवार । न्यामद ब मैदां ब मरदान वार ।

अर्थः- परन्तु वह ज़लील और मरदूद ख्वाजा दीवार की ओट से निकलकर बहादुरों की तरह युद्धस्थल में आया ही नहीं ।

35. दरेगा ! अगर रूइ ओ दीदमे । ब यक तीर लाचार बख़शीदमे ।

अर्थः- काश ! यदि मैं उसका चेहरा देख पाता तो उसको भी एक तीर बख्श कर (मौत के घाट उतार) देता ।

36. हमाख़िर बसे ज़ख़म तीरो तुफ़ंग । दो सूए बसे कुशतह शुद बेदरंग ।

अर्थः- अंततः तीरों और बंदूक़ों के बहुत से घाव खाकर दोनों पक्षों के बहुत से आदमी तुरन्त ही मरा गए ।

37. बसे बार बारीद तीरो तुफ़ंग । ज़िमी गशत हम चूं गुले लालह रंग ।

अर्थः- तीरों और गोलियों की भीषण वर्षा हुई जिससे धरती "गुले लाला" के समान लाल रंग की ही हो गई ।

38. सरोपाइ अमबोह चंदां शुदह । कि मैदां पुर अज़ गोइ चौगां शुदह ।

अर्थः- सिरों और पैरों का इतना जमाव हो गया कि लड़ाई का मैदान मानों कन्दुक-कीड़ा के लिए गेंदों और छड़ियोंसे भर गया हो ।

39. तरंकार तीरो तरंग कमां । बरआमद यके हाओ हू अज़ जहां ।

अर्थः- तीरों की सनसनाहट और कमानों की कड़कड़ाहट के फलस्वरूप सारे संसार में एक "हाय-हाय" की आवाज़ ही प्राप्त होती थी ।

40. दिग़र शोरश कैबर कीनह कोश । ज़ि मरदान मरदां बिरूं रफ़्त होश ।

अर्थः- फिर मारक तीरों के शोर-शराबे में बहादुर से बहादुर वीरों की भी बुद्धि चकरा गई ।

41. हम आख़िर चि मरदी कुनद कारज़ार । कि बर चिहल तन आयदश बेशुमार ।

अर्थः- परन्तु अन्ततः लड़ाई में वीरता भी क्या कर सकती है, जहाँ चालीस पर अगणित (सैनिक) टूट पड़ें ।

42. चिराग जहां चूं शुदह बुरकह पोश । शहे शब बरामद हमह जलवह जोश ।

अर्थः- जब जगत का दीपक (सूर्य) पर्दे में छिप गया और रात का स्वामी (चन्द्र) अपने पूरे जलवे में उदित हो गया ।

43. हर आं कस ब क़उले क़रां आयदश । कि यज़दां बरो रहिनुमा आयदश ।

अर्थः- जिस किसी को भी कुरान की क़सम पर भरोसा होता है, खुदा स्वयं उसका पथ-प्रदर्शक बन जाता है ।

44. न पेचीदह मूए न रंजीदह तन । कि बेरूं ख़ुद आवुरद दुशमन शिकन ।

अर्थः- न (मेरा) बाल बाँका हुआ और न ही मेरे शरीर को कोई कष्ट हुआ । शत्रुओं को मारनेवाले खुदा मुझको सशरीर बाहर ले आया।

45. न दानम कि ईं मरद पैमां शिकन । कि दौलत परस्त ओ ईमां फ़िकन ।

अर्थः- मुझे नहीं पता था कि यह व्यक्ति क़रारनामे को तोड़नेवाला, दौलत का पुजारी और ईमान को परे धकेल देनेवाला है ।

46. न ईमां प्रसती न औज़ाइ दीं । न साहिब शनासी न महमद यकीं ।

अर्थः- यह न तो धर्म की पूजा करता है, न ही इसकी कोई धर्म मानने की आचरण-संहिता है, और न ही इसे खुदा की पहचान और मुहम्मद पर यक़ीन है ।

47. हर आं कस कि ईमां प्रसती कुनद । न पैमां ख़ुदश पेशो पसती कुनद ।

अर्थः- जो कोई व्यक्ति अपने धर्म में विश्वास रखता है तो वह अपने दिए वचन से पीछे नहीं हटता ।

48. कि ईं मरद रा ज़रह एतबार नेसत । चि क़सम्मे कुरानसत यज़दां यकेसत ।

अर्थः- इस पुरुष का कुरान की क़सम खाना अथवा भगवान एक है कहने पर भी मुझे इसका विश्वास नहीं ।

49. चु क़समे कुरां सद कुनद इख़तियार । मरा क़तरह नायद अज़ो एतबार ।

अर्थः- यदि यह अब कुरान की सौ क़सम भी खा ले तो मुझे उस पर एक कतरे जितना भी विश्वास नहीं ।

50. अगरच तुरा एतबार आमदे । कमर वसत ए पेशवा आमदे।

अर्थः- यदि तुम्हें अपनी ही बातों पर यक़ीन होता तो कमर बाँधकर तुम स्वयं मेरे सामने आ जाते ।

51. कि फ़रज़सत बर सर तुरा ई सुख़न । कि क़उले ख़ुदा असत क़समसत मन ।

अर्थः- इस बात को पूरा करने का कर्त्तव्य तेरे सिर परा बाक़ी है, क्योंकि तूने मुझसे खुदा के वचन (कुरान) की क़सम खाई थी ।

52. अगर हज़रते ख़ुद सितादह शवद । ब जानो दिले कार वाज़िह शवद ।

अर्थः- बादशाह, यदि तुम खुद यहाँ मौजूद होओ तो दिलोजान से मेरे किए कामों का तुम्हें पता लग जाए ।

53. शुमा रा फ़रज़सत कारे कुनीं । बमूजब नविशतह शुमारे कुनीं ।

अर्थः- अब तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम अपने काम को पूरा करो । लिखे हुए के अनुसार करो ।

54. नविशतह रसीदो बगुफ़्तह ज़ुबां । बिबायद कि ईं कार राहत रसां ।

अर्थः- तेरा लिखा हुआ (पत्र) मिल गया और (सदेशवाहक द्वारा) भेजा जुबानी सदेश भी प्राप्त हो गया है । अच्छा हो यदि यह काम सबके लिए सुखदायक हो ।

55. हमूं मरद बायद शवद सुखनवर । न शिकमे दिग़र दर दहान दिगर ।

अर्थः- सभी मर्दो को बात का धनी होना चाहिए । मन में कुछ और और मुँह में कुछ और नहीं (होना चाहिए) ।

56. कि काज़ी मरा गुफ़्तह बेरूं नयम । अगर रासती ख़ुद बियारी क़दम ।

अर्थः- जो क़ाज़ी कहता है, मुझे उसी के अनुसार जानो (उससे) भिन्न मत मानो । अब अगर तुममें सच्चाई है तो खुद चलकर यहाँ आ ।

57. तुरा गर बबायद ब क़उले कुरां । बनिज़दे शुमा रा रसानम हुमा ।

अर्थः- यदि वचन लिखा हुआ कुरान (शरीफ़) तुम्हें चाहिए (जो तुमने कसम खाते समय मेरे पास भेजा था) तो मैं वह भी तुम्हारे पास भेज सकता हूँ ।

58. कि तशरीफ दर क़सबह कांगड़ कुनद । वज़ां पस मुलाक़ात बाहम शवद ।

अर्थः- यदि बादशाह कांगड़ नामक गाँव में आना चाहे तो हम लोगों की आपस में मुलाक़ात हो जाएगी ।

59. न ज़रह दरीं राह ख़तरह तुरासत । हमह कौम बैराड़ हुकम मरासत ।

अर्थः- इस रास्ते पर तुझे तनिक भी भय नहीं है, क्यों सारी बैराड़ जाति मेरी आज्ञा में है ।

60. बिया ता बमन ख़ुद ज़ुबानी कुनेम । बरूए शुमा मेहरबानी कुनेम ।

अर्थः- तुम आओ ताकि मैं खुद तुमसे बात करूँ और तुम्हारे ऊपर मेहरबानी करूँ ।

61. यके असप शाइसतए यक हज़ार । बिया ता बगीरी ब मन ई दियार ।

अर्थः- (तुम्हारा यह कहना कि) एक हज़ारा रुपए की क़ीमत का एक सुन्दर घोड़ा ले आओ और मेरे पास से यह इलाक़ा (जागीर-रूप से) हासिल कर लो (तुम इस बात को ध्यान में रखो) ।

62. शहिनशाह रा बंदहे चाकरेम । अगर हुकम आयद ब जां हाज़रेम ।

अर्थः- सम्राटों के सम्राट (परमात्मा) का मैं बंदा हूँ और गुलाम हूँ । यदि उसकी आज्ञा हो जाएगी तो जान समेत मैं हाज़िर हो जाऊँगा ।

63. अगरचे बिआयद ब फ़ुरमान मन । हज़ूर त बियायम हमह जान तन ।

अर्थः- यदि उसकी आज्ञा हो गई तो मैं जानोमाल-समेत आ जाऊँगा ।

64. अगर तो बयज़दां प्रसती कुनी । ब कारे मरा ईं न सुसती कुनी ।

अर्थः- अगर तुम खुदा की पूजा करते हो तो मेरे इस काम में देरी मत करना ।

65. बिबायद कि यज़दां शनासी कुनी । न ग़ुफ़तह कसे कस ख़राशी कुनी ।

अर्थः- तुम्हें चाहिए कि तुम परमात्मा को पहचानो और किसी के पिछलग्गू बनकर किसी को दुःखी मत करो ।

66. तु मसनद नशीं सरवरे काइनात । कि अजब असत इनसाफ़ ईं हम सफ़ात ।

अर्थः- तुम बादशाह की गद्दी पर बैठे हो, आम जनता के सरदार हो (पर) जो न्याय तुम करते हो वह भी आश्चर्य है और तुम्हारी विशेषताएं भी अजीब हैं ।

67. कि अजब असत इनसाफ़ो ईं परवरी । कि हैफ़ असत सद हैफ़ईं सरवरी ।

अर्थः- तेरा न्याय अजीब है, ग़रीबपरवरी भी अजीब है । मुझे इस पर अफ़सोस है और तुम्हारी सरदारी पर तो तुझे सौ बार अफ़सोस है ।

68. कि अजबअसत अजबअसत तकवा शुमां । बजुज़ रासती सुख़न गुफ़तन ज़यां ।

अर्थः- तेरी धर्म की व्यवस्था (फ़तवा) अजीब है । सच्चाई के बिना कुछ कहना ही अपराध है ।

69. मज़न तेग़ बर खूंन कस बेदरेग़ । तुरा नीज़ खूं असत बा चरख़ तेग़ ।

अर्थः- किसी का खून करने के लिए निस्संकोच होकर तलवार मत चला । आकाशीय तलवार से तेरा रक्त भी (फैलना) है ।

70. तु गाफ़ल म सौ मरद यज़दां हिरास । कि ओ बेनिआज़ असत ओ बे सुपास ।

अर्थः- हे मनुष्य ! तू लापरवाह मत हो और खुदा से डरो । वह बेपरवाह है, खुशामदों से परे है ।

71. कि ऊ बे मुहाबसत शाहान शाह । ज़िमीनो ज़मां सच्चए पातिशाह ।

अर्थः- वह जो डर से रहित है, बादशाहों का भी बादशाह है । वही धरती और आकाश का सच्चा बादशाह है ।

72. ख़ुदावंद ईज़द ज़मीनो ज़मां । कुनिंदहसत हर कस मकीनो मकां ।

अर्थः- जो कीड़ा से लेकर हाथी का भी (भला) करनेवाला है, बच्चे से लेकर बुड्ढे का भी काम करनेवाला है ।

73. हमअज़ पीर मोरह हमअज़ फ़ील तन । कि आजज़ निवाज़ असतो ग़ाफ़ल शिकंन ।

अर्थः- वह बेसहारों को बड़प्पन प्रदान करनेवाला और लापरवाहों का नाश करनेवाला है ।

74. कि ऊ राचु इसम असत आजज़ निवाज़ । कि ऊ बे सुपास असत ऊ बे नियाज़ ।

अर्थः- उसका नाम ग़रीबनिवाज़ है और सब आवश्यकताओं से परे और बेपरवाह है ।

75. कि ऊ बे नगूं असत ऊ बे चगूं । कि ऊ रहिनुमा असत ऊ रहिनमूं ।

अर्थः- वह रूप-रंग से रहित और चक्रक-चिह्नों से परे है । वह जो मार्ग बतानेवाला है, वही उस मार्ग पर ले चलनेवाला भी है ।

76. कि बर सर तुरा फ़रज़ क़सम कुरां । ब गुफ़्तह शुमा कार ख़ूबी रसां ।

अर्थः- तुम्हारे ऊपर कुरान की क़सम का बोझ है, इसलिए तुम अपने दिए वचन के अनुसार काम को भलीभाँति करो ।

77. बिबायद तु दानश प्रसती कुनी । बकारे शुमा चेरह दसती कुनी ।

अर्थः- (इस समय) तुझे बुद्धिमत्ता से कार्य करना चाहिए और हाथ के कामों को पक्के तौर पर करना चाहिए ।

78. चिहा शुद कि चूं बच्चगां कुशतह चार । कि बाक़ी बिमांदअसत पेचीदह मार ।

अर्थः- क्या हुआ यदि चार पुरुषों को मार दिया है । अभी कुंडलाकार सर्प तो (जीवित) मौजूद है ।

79. चि मरदी कि अख़गर ख़मोशां कुनी । कि आतिश दमां रा फ़रोज़ां कुनी ।

अर्थः- यह कैसी बहादुरी है जो चिंगारियों को तो बुझाती है और जो आग धू-धू करके जल रही है उसे तू और भी तेज़ कर रहा है ।

80. चि ख़ुश गुफ़्त फ़िरदौसीए ख़ुश ज़ुबां । शिताबी बवद कार आहरमना ।

अर्थः- सुंदर ज़ुबान वाले फ़िर्दोसी ने कैसी सुन्दर बात (शहनामा में) कही है कि जल्दबाज़ी शैतानों का काम है ।

81. कि मा बारगह हज़रत आयद शुमां । अज़ां रोज़ बाशेव शाहिद शुमां ।

अर्थः- खुदा की कचहरी में मैं आऊँगा और उस दिन (वजीद ख़ाँ के कुकर्मों के लिए) तुम्हें गवाही देनी होगी (और उसके द्वारा की गई निर्दोष हत्याओं का लेखा-जोखा देना होगा)।

42. वगरनह तु ई रा फ़रामोश कुनद । तुरा हम फ़रामोश यज़दां कुनद ।

अर्थः- अगर तुम इन बातों को भुलाने की कोशिश करोगे तो खुदा तुझे भी भुला देगा।

43. अगर कार ई बर तू बसती कमर । ख़ुदावंद बाशद तुरा बहरह वर ।

अर्थः- अगर तूने इस काम को पूरा करने के लिए कमर बाँध ली तो खुदावंद तुझे खुशनसीब बना देगा।

44. कि ई कार नेकअसत दीं परवरी । चु यज़दां शनासी बजां बरतरी ।

अर्थः- यह कार्य अच्छा है, धर्म के नाम का है, ईश्वर को जानने का है और प्राणों के लिए भलाईकारक है।

45. तुरा मन न दानम कि यज़दां शनास । बरामद ज़ि तू कारहा दिल ख़रास ।

अर्थः- मैं तुम्हें खुदा की पहचान करनेवाला नहीं मानता, क्योंकि तुम बहुत से दिल दुखी करनेवाले काम कर चुके हो।

86. शनासद हमीं तू न यज़दां करीम । न ख़्वाहद हमी तू बदौलत अज़ीम ।

अर्थः- वह दयालु प्रभु भी तुम्हें नहीं पहचानता और तुम्हारी बड़ी दौलत को नहीं जानता ।

87. अगर सद कुरां रा बख़ुरदी क़सम । मरा इअतबारे न ई ज़रह दम ।

अर्थः- (अब) यदि तुम कुरान की सौ क़समें खा लो तो मुझे रत्ती भर विश्वास नहीं ।

88. हज़ूरी न आयम न ई रह शवम । अगर शह बख़्वाहद मन आं जा रवम ।

अर्थः- मैं तेरे दरबार में भी नहीं आऊँगा और न ही इस रास्ते पर चलूँगा । अगर बादशाह कोई स्थान तय करे तो मैं भी नहीं जाऊँगा ।

89. ख़ुशश शाह शाहान औरंगज़ेब । कि चालाक दसत असत चाबुक रकेब ।

अर्थः- औरंगज़ेब तू (अपने आपको) शहंशाह (मानकर) खुश है । तू चालाक और दृढ़ शासक (अपने आपको मानता) है ।

90. चि हुसनल जमालसत रौशन ज़मीर । ख़ुदावंद मुलक असत साहिब अमीर ।

अर्थः- तू सुन्दर-स्वरूप, बुद्धि का मालिक (मानता) है । देश का स्वामी और अमीरों का मालिक (मानता) है ।

91. बरतीब दानश ब तदबीर तेग़। ख़ुदावंद देग़ो ख़ुदावंद तेग़।

अर्थः- तुम युक्ति और तलवार से देश को क़ाबू कर रहे हो। इसीलिए देग़ और तेग़ के मालिक (मानते) हो।

92. कि रौशन ज़मीर असत हुसनुल जमाल। ख़ुदावंद बख़शिंदहे मुलक माल।

अर्थः- तुम प्रबुद्ध हो, प्रभावशाली और सुन्दर स्वरूप वाले, (प्रजा के) स्वामी और देश को दौलत देनेवाले हो।

93. कि बख़शिश कबीर असत दर जंग कोह। मलायक सिफ़त चूं सुरया शिकोह।

अर्थः- तुम बड़े मेहरवान हो, युद्ध में पर्वत के समान अडिग हो, फ़रिश्तों के समान कलापूर्ण हो और तुम्हारा प्रताप आकाश की ऊँचाई तक फेला हुआ (माना जाता) है।

94. शहिनशाह औरंगज़ेब आलमीं। कि दाराइ दौर असत दूर असत दीं।

अर्थः- तुम सम्राट् हो, जगत् के सिंहासन की शोभा से युक्त हो। धरती के चक्क्क को सँभालनेवाले हो, पर धर्म से विहीन और दूर हो।

95. मनम कुशतहअम कोहीआ बुतप्रसत। कि आं बुत प्रसतंदो मन बुत शिकसत।

अर्थः- मैं धूर्त पहाड़ी राजाकों का नाशक हूँ, क्योंकि वे मूर्तिपूजक हैं । वे मूर्तिपूजक (संसारी) हैं और मैं मूर्ति-भंजक (संसारी जड़ बंधन) हूँ ।

96. बबीं ग़रदशे बेवफ़ाए ज़मा । परसे पुशत उफ़तद रसानद ज़ियां ।

अर्थः- देखो, ज़माने को बेवफ़ाई का हाल, यह जिसके पीछे पड़ जाता है उसे नुक़सान पहुँचाता है ।

97. बबीं कुदरते नेक यज़दान पाक । कि अज़ यक बदह लख़ रसानद हलाक ।

अर्थः- परन्तु दूसरी तरफ़ उस नेक खुदा की कुदरत को भी देख जो दूसरी ओर दस लाख (असंख्य) को भी मौत देता है ।

98. कि दुशमन कुनद मिहरबां असत दोसत । कि बख़शिंदगी कार बख़शिंदह ओसत ।

अर्थः- शत्रु क्या कर सकता है, अगर दोस्त मेहरबान हो । उस दाता (खुदा) का काम ही कृपा करना है ।

99. रिहाई दिहो रहिनुमाई दिहद । ज़ुबां रा बसिफ़त आशनाई दिहद ।

अर्थः- वह मुक्तिदाता पथ-प्रदर्शक है और जीभ को उसकी स्तुति की पहचान देता है ।

100. ख़सम रा चु कोरऊ कुनद वक़्त कार । यतीमां बिरूं मे बुरद बेअज़ार ।

अर्थः- शत्रु को बुरा कर्म करते समय अंधा कर देता है और अनाथों को काँटे जितना घाव लगे बिना ही वह (शत्रु के) घेरे से बाहर निकाल लेता है ।

101. हरांकस कि ओ रासत बाज़ी कुनद । रहीमे बरो रहम साज़ी कुनद ।

अर्थः- उस प्रत्येक व्यक्ति से जो (संसार में) सत्य की कमाई करता है, दयालु परमामा रहम का बर्ताव करता है ।

102. कसे ख़िदमत आयद बसे कलबो जां । ख़ुदावंद बख़शीद बर वै अमां ।

अर्थः- अगर कोई दिलोजान से उसकी सेवा में आता है तो वह खुदावंद प्रभु उस पर सुख-शाति की कृपा करता है ।

103. चि दुशमन बरां हीलहसाज़ी कुनद । कि बर वै खुदा रहमसाज़ी शवद ।

अर्थः- शत्रु उसके साथ चालाकी क्या कर सकता है जिस पर मार्गदर्शक खुदा खुश हो ।

104. अगर यक बर आयद दहो दह हज़ार । निगहबान ऊ रा शवद किरदगार ।

अर्थः- यदि एक अकेले पर दस हज़ार दुश्मन चढ़ाई कर दे तो भी कर्त्ता-पुरुष उसका रक्षक होता है ।

105. तुरा गर नज़र हसत लशकर व ज़र । कि मारा निगह असत यज़दां शुकर ।

अर्थः- तुम्हारी नज़र अगर (अपनी) फ़ौज की तरफ़ है (तो) मेरी नजर भी परमात्मा का धन्यवाद करने की ओर है ।

106. कि ऊ रा ग़रूर असत बर मुलक माल । व मारा पनाह असत यज़दां अकाल ।

अर्थः- जो अहंकार उसे अपनी सल्तनत और दौलत पर है वैसे ही मुझे अकालपुरुष के आश्रय पर फ़ख़ूर है ।

107. त ग़ाफ़ल मशौ ज़ी सिपंजी सराइ । कि आलम बगुज़रद सरे जा बजाइ ।

अर्थः- तू इस नाशवान दुनिया में बेखबर मत हो, क्योंकि जगत निरन्तर परिवर्तनशील एवं चलायमान है ।

108. बबीं गरदश बेवफ़ाए ज़मां । कि बर हर बुगुज़रद मकीनो मकां ।

अर्थः- इस परिवर्तनशील ज़माने को देख जो हर मकान और मकान में रहनेवाले पर अधिकार जमाए जा रहा है ।

109. तु गर ज़बर आजज़ ख़राशी मकुन । क़सम रा ब तेशह तराशी मकुन ।

अर्थः- तुम अगर बलवान हो तो ग़रीबों को दुःखी मत करो और क़समों के औज़ारों से लोगों को मत छीनो ।

110. चु हक़ यार बाशद चि दुशमन कुनद । अगर दुशमनीरा ब सद तन कुनद ।

अर्थः- अगर खुदा दोस्त है, तो दुश्मन क्या कर लेगा; चाहे शत्रु सैकड़ों लोगों को एकत्र कर ले ।

111. ख़सम दुशमनी गर हज़ार आवुरद । न यक मूइ ऊ रा अज़ार आवुरद ।

अर्थः- शत्रु अगर शत्रुता निभाने के लिए हज़ार व्यक्ति भी चढ़ा लाए तो भी एक बाल टूटने जितना दुःख भी नहीं ला सकता ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"